Shri Ganesha Mantra Sadhana Evam Siddhi

श्रीगणेश मंत्र साधना एवं सिद्धि

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

www.scribd.com/mahakalshakti
www.gurudevrajverma.com

गण' का अर्थ है- वर्ग, समूह, समुदाय। 'ईश' का अर्थ है- स्वामी। अर्थात् शिवगणों एवं गणदेवों के स्वामी होने से इन्हें गणेश कहा जाता है। किसी भी कार्य में शुभता एवं सफलता हेतु सर्वप्रथम गणपति का ही पूजन किया जाता है। शंकराचार्यजी ने पंचदेवताओं की लिंगपूजा का विधान बताया है जिसके अनुसार दक्षिण भारत के ब्राह्मण लोग नित्य एक साथ पंचलिंग की पूजा करते हैं। काशी में भी पंचलिंग पाये जाते हैं। वे इस प्रकार हैं- शिव का बाणलिंग, विष्णु की शालग्राम शिला, सूर्य का स्फटिक-बिम्ब, शक्ति का धातुयंत्र और गणपति का चतुष्कोण रक्तवर्ण प्रस्तरविशेष। जिसका जो इष्टदेवता है, उस देवता के विग्रह को केन्द्रस्थान में रखकर तथा अन्य चार विग्रहों को चारों

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ओर रखकर आवरण देवता के रूप में पूजा की जाती है। ज्ञानमालानुसार- गणपतिजी की स्थापना मध्य में, विष्णुजी की ईशानकोण में, शंकरजी की अग्निकोण में, सूर्यदेव की नैर्ऋत्यकोण में और दुर्गाजी की स्थापना वायुकोण में करनी चाहिये।

महाभिषेक- ताम्रपात्र में स्थित सुगन्धित द्रव्य युक्त शुद्ध जल से गणपति का महाभिषेक करते समय 'गणपत्यथर्वशीर्षम्' की इक्कीस आवृत्ति करनी चाहिये। पंचोपचर पूजन के साथ दूर्वा अर्पित करनी चाहिये। इनकी पूजा में तुलसीदल निषिध है।

जैन एवं बौद्ध धर्म, संत एकनाथ, तुकाराम, नामदेव, तुलसीदास, शंकराचार्य सहित कई सिद्धपुरुषों एवं देवताओं द्वारा गणेशजी की स्तुति एवं प्रशंसा की गई है। तंत्रशास्त्रों, वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य विशिष्ट ग्रन्थों में गणेशोपसना का विस्तृत वर्णन मिलता है। जिसको विधिवत् गुरुपरम्परा से ग्रहण करना चाहिये। भगवान् गणेश की उपासना से ऋद्धि-सिद्धि तथा समस्त सुखों की प्राप्ति के साथ बल-बुद्धि-विद्या का विकास होता है एवं सर्व विघ्नों का नाश होता है। भगवान् गजानन के असंख्य अवतार व स्वरूप हैं, मुद्गलपुराण में आठ मुख्य अवतारों का वर्णन है- वक्रतुण्ड, एकदन्त, महोदर, गजानन, लंबोदर, विकट, विघ्नराज एवं धूमवर्ण।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

शुभकाल, महापर्व या शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गुरु की आज्ञा प्राप्त कर यम नियमों का पालन करते हुए गणेश जी की साधनारम्भ करनी चाहिये। गणेश जी को तर्पण सर्वाधिक प्रिय है। अतः मंत्र जप के साथ नित्य 21, 31, 54 या 108 बार शुद्ध जल या प्रचलित सामग्री से तर्पण कर सकते हैं। पूजन के समय नैवेद्य में मोदक (लड्डू) का भोग अर्पित करना चाहिये। गणपति मंत्रसग्रह अत्यन्त विशाल है जिसको एक स्थान पर एकत्र करना असम्भव है। अतः गणेशजी के कुछ प्रमुख मंत्रों की संक्षिप्त विधि प्रस्तुत की जा रही है। इसके अतिरिक्त संकटनाश के लिये संकशनाशनस्तोत्र, चिन्ता एवं रोग नाश के लिये मयूरेशस्तोत्र, पुत्रप्राप्ति हेतु संतानगणपतिस्तोत्र, श्री एवं पुत्रप्राप्ति हेतु गणाधिपस्तोत्र एवं चारों पुरुषार्थों की सिद्धि हेतु गजाननस्तोत्र का पठन उत्तम है।

अष्टविनायकमंत्र- 1- मयूरेश्वर- "गं ऐं ह्रीं श्रीं मयूर आरूढ़ाय सिंधु दैत्य विनाशाय श्रीमयूरेश्वराय नमः।"

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

2-चिंतामणि- "गं ऐं ह्रीं श्रीं कपिल ऋषि सुपूज्याय चिंतामणि प्रदानाय श्रीचिंतामणि गणेशाय नमः।"

3-महागणपति- "गं ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरासुर वध कारणाय शिव सुपूजिताय श्रीमहागणपतये नमः।"

4-सिद्धविनायक- "गं ऐं ह्रीं श्रीं विष्णु पूजिताय मधुकैटभ वधकारणाय दक्षिण शुण्डधारणाय समस्त सिद्धि प्रदानाय श्रीसिद्धिविनायकाय नमः।"

5-विघ्नेश्वर- "गं ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्र सुपूजिताय विघ्नासुर प्राणहरणाय श्रीविघ्नेश्वराय नमः।"

6-गिरिजात्मक- "गं ऐं ह्रीं श्रीं गिरिजा सुपूजिताय शक्तिपुत्राय श्रीगिरिजात्मकाय नमः।"

7-बालेश्वर- "गं ऐं ह्रीं श्रीं बाल्यस्वरूपाय भक्तप्रियाय श्रीबालेश्वराय नमः।"

8-वरदविनायक- "गं ऐं ह्रीं श्रीं वरदहस्ताय सर्वबाधा प्रशमनाय श्रीवरद विनायकाय नमः।"

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गणेशन्यास– न्यास के अन्तर्गत प्रत्येक मंत्र के उच्चारण से स्वयं को स्पर्श कर देवता को अपने शरीर के विभिन्न अंगों में भावित कर स्थापित किया जाता है जिससे साधक देवतुल्य हो जाता है। न्यास सिद्धि के पश्चात् की गयी उपासना शीघ्र फलीभूत होती है, ग्रहपीड़ा से शान्ति मिलती है एवं साधक को देवता का रक्षा कवच प्राप्त होता है।

दक्षिणहस्ते वक्रतुण्डाय नमः। वामहस्ते शूर्पकर्णाय नमः। ओष्ठे विघ्नेशाय नमः। सम्पुटे गजाननाय नमः। दक्षिणपादे लम्बोदराय नमः। वामपादे एकदन्ताय नमः। शिरसि एकदन्ताय नमः। चिबुके ब्रह्मणस्पतये नमः। दक्षिणनासिकायां विनायकाय नमः। वामनासिकायां ज्येष्ठराजाय नमः। दक्षिणनेत्रे विकटाय नमः। वामनेत्रे कपिलाय नमः। दक्षिणकर्णे धरणीधराय नमः। वामकर्णे आशापूरकाय नमः। नाभौ महोदराय नमः। हृदये धूम्रकेतवे नमः। ललाटे मयूरेशाय नमः। दक्षिणबाहौ स्वानन्दवासकारकाय नमः। वामबाहौ सच्चित्सुखधाम्ने नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

लघुषोढान्यास मातृकाओं सहित– गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्। देवीं मंत्रमयीं नौमि मातृकापीठरूपिणीम्।।

ऐं ह्रीं श्रीं अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः, शिरसि। ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीयुक्ताय विघ्नराजाय नमः, मुखवृत्ते।

ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः, दक्षनेत्रे। ऐं ह्रीं श्रीं ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः, वामनेत्रे।

ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते नमः, दक्षकर्णे। ऐं ह्रीं श्रीं ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः, वामकर्णे।

ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजे नमः, दक्षनासापुटे। ऐं ह्रीं श्रीं ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः, वामनासापुटे।

ऐं ह्रीं श्रीं लृं कान्तियुक्ताय एकदन्ताय नमः, दक्षगण्डे।ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः, वामगण्डे।

ऐं ह्रीं श्रीं एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः, ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं जटायुक्ताय निरंजनाय नमः, अधरोष्ठे।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ऐं ह्रीं श्रीं ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः, ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ऐं ह्रीं श्रीं औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः, अधोदन्तपंक्तौ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं नन्दायुक्ताय शंकुकर्णाय नमः, जिह्वाग्रे। ऐं ह्रीं श्रीं अः सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय नमः, कण्ठे।

ऐं ह्रीं श्रीं कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः, दक्षबाहुमूले। ऐं ह्रीं श्रीं खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः, दक्षकूपरि।

ऐं ह्रीं श्रीं गं जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः, दक्षमणिबन्धे। ऐं ह्रीं श्रीं घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः, दक्षकरांगुलिमूले।

ऐं ह्रीं श्रीं ङ विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः, दक्षकरांगुल्यग्रे। ऐं ह्रीं श्रीं चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः, वामबाहुमूले।

ऐं ह्रीं श्रीं छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः, वामकूपरि। ऐं ह्रीं श्रीं जं मदविह्लायुक्ताय सदाशिवाय नमः, वाममणिबन्धे।

ऐं ह्रीं श्रीं झं विकटायुक्ताय आमोदाय नमः, वामकरांगुलिमूले। ऐं ह्रीं श्रीं ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः, वामकरांगुल्यग्रे।

ऐं ह्रीं श्रीं टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः, दक्षोरुमूले। ऐं ह्रीं श्रीं ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः, दक्षजानुनि।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ऐं ह्रीं श्रीं डं शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः, दक्षगुल्फे। ऐं ह्रीं श्रीं ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः, दक्षपादांगुलिमूले।

ऐं ह्रीं श्रीं णं मानुषीयुक्ताय शूराय नमः, दक्षपादांगुल्यग्रे। ऐं ह्रीं श्रीं तं मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः, वामोरुमूले।

ऐं ह्रीं श्रीं थं वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः, वामजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं दं भृकुटियुक्ताय वरदाय नमः, वामगुल्फे।

ऐं ह्रीं श्रीं धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः, पादांगुलिमूले। ऐं ह्रीं श्रीं नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः, वामपादांगुल्यग्रे।

ऐं ह्रीं श्रीं पं धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय नमः, दक्षपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं फं यामिनीयुक्ताय सेनान्यै नमः, वामपार्श्वे।

ऐं ह्रीं श्रीं बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः, पृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः, नाभौ।

ऐं ह्रीं श्रीं मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः, जठरे। ऐं ह्रीं श्रीं यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः, हृदये।

ऐं ह्रीं श्रीं रं चपलायुक्ताय जटिने नमः, दक्षस्कन्धे। ऐं ह्रीं श्रीं लं ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः, गलपृष्ठे।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ऐं ह्रीं श्रीं वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः, वामस्कन्धे। ऐं ह्रीं श्रीं शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः, हृदयादिदक्षकरांगुल्यंतम्।

ऐं ह्रीं श्रीं षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः, हृदयादिवाम करांगुल्यंतम्। ऐं ह्रीं श्रीं सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः, हृदयादिदक्ष पादांगुल्यंतम्।

ऐं ह्रीं श्रीं हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः, हृदयादिवामपादांगुल्यंतम्। ऐं ह्रीं श्रीं ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः, हृदयादि गुह्यान्तम्।

ऐं ह्रीं श्रीं क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः, हृदयादिमूर्धान्तम्। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमः।

इस दिव्यन्यास के माध्यम से मनुष्य को गणपति सहित मातृकाओं की शक्ति प्राप्त होती है एवं शरीर में दिव्यशक्तियों का वास होता है।

काशी के छप्पन विनायक– काशी के छप्पन विनायक सात आवरणों में विभक्त हैं–

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

प्रथमावरण के अन्तर्गत अर्कविनायक, दुर्गविनायक, भीमचण्डविनायक, देहलीविनायक, उद्दण्डविनायक, पाशपाणिविनायक, खर्वविनायक तथा सिद्धिविनायक हैं।

द्वितीयावरण में लम्बोदरविनायक, कूटदन्तविनायक, शालकटंकविनायक, कूष्माण्डविनायक, मुण्डविनायक, विकटदन्तविनायक, राजपुत्रविनायक एवं प्रणवविनायक हैं।

तृतीयावरण में वक्रतुण्डविनायक, एकदन्तविनायक, त्रिमुखविनायक, पंचास्यविनायक, हेरम्बविनायक, विघ्नराजविनायक, वरदविनायक और मोदकप्रियविनायक के विग्रह प्रसिद्ध हैं।

चतुर्थावरण में अभयदविनायक, सिंहतुण्डविनायक, कूणिताक्षविनायक, क्षिप्रप्रसादविनायक, चिन्तामणिविनायक, दन्तहस्तविनायक, पिचिण्डिलविनायक तथा उद्दण्डमुण्डविनायक हैं।

पंचमावरण में स्थूलदंतविनायक, कलिप्रियविनायक, चतुर्दन्तविनायक, द्वितुण्डविनायक, ज्येष्ठविनायक, गजविनायक, कालविनायक एवं नागेशविनायक हैं।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

षष्ठावरण में मणिकर्णविनायक, आशाविनायक, सृष्टिविनायक, यक्षविनायक, गजकर्णविनायक, चित्रघण्टविनायक, स्थूलजंघविनायक और मंगलविनायक हैं।

सप्तमावरण में मोदविनायक, प्रमोदविनायक, सुमुखविनायक, दुर्मुखविनायक, गणनाथविनायक, ज्ञानविनायक, द्वारविनायक तथा अविमुक्तविनायक की प्रतिमाएं प्रसिद्ध हैं।

उपर्युक्त छप्पन विनायकों में से छः के दो-दो नाम मिलते हैं। लम्बोदरविनायक, वक्रतुण्डविनायक, दन्तहस्तविनायक, द्वितुण्डविनायक, गजविनायक तथा स्थूलजंघविनायक- से क्रमशः चिन्तामणिविनायक, सरस्वतीविनायक, हस्तदन्तविनायक, द्विमुखविनायक, राजविनायक और मित्रविनायक के नाम से पुकारे जाते हैं।

जो मनुष्य नित्य त्रिकाल संध्या छप्पन विनायकों का स्मरण करते हैं, उनके कष्ट-संताप-भय दूर होते हैं एवं परम कल्याण को सिद्ध करते हैं। इस पवित्र स्तोत्र को सिद्ध करने के पश्चात् इन नामों को भोजपत्र पर लिखकर कण्ठ या भुजा में धारण करने से मनुष्य सर्वबाधाओं से रक्षित होकर परम सौभाग्य को अर्जित करता है।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

व्यापार स्थल पर उक्त भोजपत्र को विधिवत् स्थापित करने से महालक्ष्मी का स्थायी वास होता है।

चतुर्थी तिथि माहात्म्य– ब्रह्माजी से चतुर्थी तिथि तथा चतुर्थी तिथि से सभी तिथियों की उत्पत्ति मानी गयी है। इसलिये चतुर्थी तिथि को सभी तिथियों की माता अथवा जननी कहा गया है। ब्रह्माजी ने सृष्टि के विस्तार हेतु चतुर्थी देवी को गणेशजी का षड्क्षरमंत्र प्रदान किया। देवी चतुर्थी ने सहस्र वर्ष तक घोर तपस्या कर गणेशजी को प्रसन्न किया। गणेशजी ने प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा– ‘‘चतुर्विध फलप्रदायिनी देवि! तुम मुझे सदा प्रिय रहोगी। तुम समस्त तिथियों की माता होओगी और तुम्हारा नाम चतुर्थी होगा। तुम्हारा वामभाग ‘कृष्ण’ एवं दक्षिणभाग ‘शुक्ल’ होगा। तुम मेरी जन्मतिथि होओगी। तुम्हारा व्रत करने वाले का मैं विशेष रूप से पालन करुंगा और इस व्रत के समान अन्य कोई व्रत नही होगा। शुक्लपक्ष की चतुर्थी को मेरे भक्तजन सदा तुम्हारा उपवास करेंगे। जो निराहार रहकर मेरे साथ तुम्हारी उपासना करेंगे, उनके संचित कर्मबंधन समाप्त हो जायेंगे। तुम्हारा नाम ‘वरदा’ होगा।’’ यह कहकर भगवान् गणेश अन्तर्धान हो गये। गणाध्यक्ष का ध्यान

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

करते हुए उन्होंने सृष्टि विस्तार का उपक्रम आरम्भ ही किया था कि उनके मुखारविन्द से प्रतिपदा, नासिका से द्वितीया, वक्ष से तृतीया, अंगुली से पंचमी, हृदय से षष्ठी, नेत्र से सप्तमी, बाहु से अष्टमी, उदर से नवमी, कान से दशमी, कण्ठ से एकादशी, पैर से द्वादशी, स्तन से त्रयोदशी, अहंकार से चतुर्दशी, मन से पूर्णिमा तथा जिह्वा से अमावस्या तिथि प्रकट हुई।

श्रीगणेश षड्क्षर मंत्र प्रयोग- विनियोग- ॐ अस्य श्रीवक्रतुण्डायगणेशमंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, विघ्नेशो देवता, वं बीजं, यं शक्तिः, अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप्छन्दसे नमः मुखे। विघ्नेशो देवतायै नमः हृदि। वं बीजाय नमः गुह्ये। यं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगायः नमः सर्वांगे।

षडंगन्यास- ॐ वं नमः .... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः। ॐ क्रं नमः .... तर्जनीभ्यां नमः .... शिरसे स्वाहा। ॐ तुं नमः .. .. मध्यमाभ्यां नमः .... शिखायै वषट्। ॐ डां नमः .... अनामिकाभ्यां नमः .... कवचाय हुम् ॐ यं नमः ....

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

कनिष्ठिकाभ्यां नमः .... नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हुँ नमः .... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ..... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान् दधतं गजास्यम्। रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत् प्रसन्नम खिलाभरणाभिरामम्।।

बीजमंत्र- 'गं।'

षड्क्षर मंत्र- 'वक्रतुण्डाय हुम्।'

प्रयोग- एक लाख जप विधिपूर्वक करें। पुरश्चरण में छः लाख जप करें। अष्टद्रव्यों से होम विधि सम्पन्न करनी चाहिये। ईख, सत्तू, केला, चिउड़ा, तिल, मोदक, नारिकेल, धान का लावा- ये अष्टद्रव्य कहे गये हैं। इस प्रकार मंत्र सिद्ध होने के पश्चात् काम्य प्रयोग करना चाहिये। गुरुमुख से मंत्र ग्रहणकर, ब्रह्मचर्य व समस्त नियमों का ध्यान रखते हुए प्रतिदिन 12 हजार मंत्रों का जप करने से 6 माह के भीतर जन्म-जन्मान्तरों की दरिद्रता से मुक्ति

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

मिलती है। एक चतुर्थी से दूसरी चतुर्थी तक नित्य दस हजार जप करने और प्रतिदिन एक सौ आठ आहुति प्रदान करने से भी यही फल प्राप्त होता है। घृत लिप्त अन्न की आहुतियां अर्पण करने से धन धान्य की प्राप्ति होती है। जीरा, सेंधा-नमक तथा काली मिर्च से मिश्रित अष्टद्रव्यों से नित्य एक हजार आहुति होम करने से साधक एक ही पक्ष में स्थिर लक्ष्मी को सिद्ध करता है। प्रतिदिन मूल मंत्र से 444 बार तर्पण करने से भी साधक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

गणपति गायत्री- "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।"

तीव्रा, ज्वालिनी, नन्दा, भोगदा, कामरूपिणी, उग्रा, तेजोवती, सत्या तथा विघ्ननाशिनी- ये गणपति को नौ शक्तियां हैं। जिनका नित्य पूजन अनिवार्य है।

गणपति के 16 नाम- ॐ गं सुमुखाय नमः। ॐ गं एकदन्ताय नमः। ॐ गं कपिलाय नमः। ॐ गं गजकर्णाय नमः। ॐ गं लम्बोदराय नमः। ॐ गं विकटाय नमः। ॐ गं विघ्नराजाय नमः। ॐ गं गणाधिपाय नमः। ॐ गं धूमकेतवे नमः। ॐ गं

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गणाध्यक्षाय लमः। ॐ गं कालचन्द्राय नमः। ॐ गं गजाननाय नमः। ॐ गं वक्रतुण्डाय नमः। ॐ गं शूर्पकर्णाय नमः। ॐ गं हेरम्बाय नमः। ॐ गं स्कन्दपूर्वजाय नमः।

गणपति के इन सोलह नामों का जो विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, किसी शुभ कार्य अथवा संकटकाल में स्मरण करता है, उसे कोई विघ्न नहीं होते। इन नामों द्वारा दूर्वा या पुष्प अर्पित करने से गणेशजी प्रसन्न होते हैं।

महागणपति मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य श्री महागणपतिमंत्रस्य गणक ऋषिः, निवृद गायत्री छन्दः, महागणपतये देवता, ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडंगन्यास- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां अस्त्राय फट्।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ध्यानम्- हस्तीन्द्रा चूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसा दाश्लिष्टं प्रियया स पद्मकरया सांकस्थया संगतम्। बीजापूर गदा धनुस्त्रिशिख युक् चक्राब्ज पाशोत्पलम् ब्रीह्यग्र स्व विषाण रत्न कलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे।।

मंत्र- "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।'

विधि- यह सर्वकार्य प्रदाता मंत्र त्रैलोक्य के वशीकरण में सक्षम है। सम्पूर्ण नियमों का पालन करते हुए मंत्र के चार लाख जप करने चाहिये। अष्टद्रव्यों से होम करें। इस प्रक्रिया से साधक काम्य प्रयोग का अधिकारी हो जाता है। कमलों के हवन से राजा समान व्यक्ति एवं कुमुद पुष्पों के होम से मंत्री को वशीभूत किया जा सकता है। मुनक्का के होम से स्वर्ण, गोदुग्ध के होम से गायें, दधिलिप्त चरु के हवन से ऋद्धि, लाजा होम से वर एवं शुद्ध घृत के होम से शीघ्र धनागम होता है।

ऋणहर्ता श्रीगणेश मंत्र- विनियोग- अस्य श्रीऋणहरणकर्तृ गणपतिमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः, श्रीऋणहरणकर्तृ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गणपतिदेवता, ग्लौं बीजम्, गः शक्तिः, गौं कीलकम्, सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- सदाशिवर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीऋणहरणकर्तृगणेशदेवतायै नमः हृदि। ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये। गः शक्तये नमः पादयोः। गौं कीलकाय नमः सर्वांगे।

अंगन्यास- ॐ गणेश ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः। ऋणं छिन्धि ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा। वरेण्यं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्। हुं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुं। नमः ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्। फट् ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

श्रीध्यानम्- सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्। ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्।।

मंत्र- "ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।"

प्रयोग- एक लाख जप करने से मनुष्य दुःख एंव निर्धनता से मुक्त होकर अतुल सम्पत्ति का अधिकारी होता है। निरन्तर जप से

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

मनुष्य का भाग्य उद्य होता है, ज्ञान की वृद्धि होती है, भूतादि दोष समाप्त होते हैं एवं मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

संसार मोहन गणेश कवच– प्रस्तुत कवच का नित्य पाठ करने वाले मनुष्य की भगवान् गणेश सर्वविघ्नों से रक्षा करते हैं। गणपति साधक को नित्य पूजन में कवच पाठ को अवश्य सम्मिलित करना चाहिये। वशीकरण या मोहनादि प्रयोग में यह कवच शीघ्र सफलता प्रदान करता है।

विनियोग– ॐ अस्य श्रीगणेश कवच मंत्रस्य, प्रजापतिः ऋषिः, वृहती छन्दः, श्रीगजमुख विनायको देवता, गं बीजं, गीं शक्तिः, गः कीलकम्, धर्मकामार्थमोक्षेषु, श्रीगणपति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

स्तोत्र– ॐ गं हुं श्रीगणेशाय स्वाहा मे पातु मस्तकम्। द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो ललाटो मे सदाऽवतु।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गमिति वै सततं पातु लोचनम्। तालुकं पातु विघ्नेशः सततं धरणीतले।।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमिति परं सततं पातु नासिकाम्। ॐ गौं गं शूपकर्णाय स्वाहा पात्वधरं मम्।।

दन्ताश्च तालुकां जिह्वा पातु मे षोडशाक्षरः। ॐ लं श्री लम्बोदरायेति स्वाहा गण्डं सदाऽवतु।।

ॐ क्लीं ह्रीं विघ्ननाशाय स्वाहा कर्णं सदाऽवतु। ॐ श्रीं गं गजाननायेति स्वाहा स्कंधं सदाऽवतु।।

ॐ ह्रीं विनायकायेति स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु। ॐ क्लीं ह्रींमिति कंकालं पातु वक्षःस्थलं च गम्।।

करौ पादौ सदा पातु सर्वांगं विघ्ननिघ्नकृत। प्राच्यां लम्बोदरः पातु चाग्नेच्यां विघ्ननायकः।।

दक्षिणे पातु विघ्नेशो नैर्ऋत्यां तु गजाननः। पश्चिमे पार्वती पुत्रो वायव्यां शंकरात्मजः।।

कृष्णस्यांशश्चोत्तरे च परिपूर्णतमस्य च। ऐशान्यमेकदन्तश्च हेरम्बः पातु चोर्ध्वतः।।

अधो गणाधिपः पातु सर्वपूज्यश्च सर्वतः। स्वप्ने जागरणे चैव पातु मां योगिनां गुरुः।।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

इति ते कथितं वत्स सर्वमंत्रौघविग्रहम्। संसार मोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।

श्रीगणपति अष्टोऽत्तरशतनामावलि- ध्यानश्लोका- ओंकार संनिभमिभाननमिन्दुभालं मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम्। लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवं ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्।।

नामवालि- ॐ गणेश्वराय नमः। ॐ गणक्रीडाय नमः। ॐ महागणपतये नमः। ॐ विश्वकर्त्रे नमः। ॐ विश्वमुखाय नमः। ॐ दुर्जयाय नमः। ॐ धूर्जयाय नमः। ॐ जयाय नमः। ॐ सुरूपाय नमः। ॐ सर्वनेत्राधिवासाय नमः। ॐ वीरासनाश्रयाय नमः। ॐ योगाधिपाय नमः।ॐ तारकस्थाय नमः। ॐ पुरुषाय नमः। ॐ गजकर्णकाय नमः। ॐ चित्रांगाय नमः। ॐ श्यामदशनाय नमः। ॐ भालचन्द्राय नमः। ॐ चतुर्भुजाय नमः। ॐ शम्भुतेजसे नमः। ॐ यज्ञकायाय नमः। ॐ सर्वात्मने नमः। ॐ सामबृंहिताय नमः। ॐ कुलाचलांसाय नमः। ॐ व्योमनाभये नमः। ॐ कल्पद्रुमवनालयाय नमः। ॐ निम्ननाभये नमः। ॐ स्थूलकुक्षये नमः। ॐ पीनवक्षसे नमः। ॐ बृहद्भुजाय नमः। ॐ पीनस्कन्धाय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ कम्बुकण्ठाय नमः। ॐ लम्बोष्ठाय नमः। ॐ लम्बनासिकाय नमः। ॐ सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः। ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः। ॐ इक्षुचापधराय नमः। ॐ शूलिने नमः। ॐ कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः। ॐ अक्षमालाधराय नमः। ॐ ज्ञानमुद्रावते नमः। ॐ विजयावहाय नमः। ॐ कामिनी कामना काममालिनी केलिलालिताय नमः। ॐ अमोघसिद्धये नमः। ॐ आधाराय नमः।ॐ आधाराधेयवर्जिताय नमः। ॐ इन्दीवरदलश्यामाय नमः। ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः। ॐ कर्मसाक्षिणे नमः। ॐ कर्मकर्त्रे नमः। ॐ कर्माकर्मफलप्रदाय नमः। ॐ कमण्डलुधराय नमः। ॐ कल्पाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ कटिसूत्रभृते नमः। ॐ कारुण्यदेहाय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ गुह्यागमनिरूपिताय नमः। ॐ गुहाशयाय नमः। ॐ गुहाब्धिस्थाय नमः। ॐ घटकुम्भाय नमः। ॐ घटोदराय नमः। ॐ पूर्णानन्दाय नमः। ॐ परानन्दाय नमः। ॐ धनदाय नमः। ॐ धरणीधराय नमः। ॐ बृहत्तमाय नमः। ॐ ब्रह्मपराय नमः। ॐ ब्रह्मण्याय नमः। ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय नमः। ॐ भव्याय नमः। ॐ भूतालयाय नमः। ॐ भोगदात्रे नमः। ॐ महामनसे नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। ॐ वन्द्याय नमः। ॐ वज्रनिवारणाय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ विश्वकर्त्रे नमः। ॐ विश्वचक्षुषे नमः। ॐ हवनाय नमः। ॐ हव्यकव्यभुजे नमः। ॐ स्वतंत्राय नमः। ॐ सत्यसंकल्पाय नमः। ॐ सौभाग्यवर्धनाय नमः। ॐ कीर्तिदाय नमः। ॐ शोकहारिणे नमः। ॐ त्रिवर्गफलदायकाय नमः। ॐ चतुर्बाहवे नमः। ॐ चतुर्दन्ताय नमः। ॐ चतुर्थीतिथिसम्भवाय नमः। ॐ सहस्रशीर्षे पुरुषाय नमः। ॐ सहस्राक्षाय नमः। ॐ सहस्रपादे नमः। ॐ कामरूपाय नमः। ॐ कामगतये नमः। ॐ द्विरदाय नमः। ॐ द्वीपरक्षकाय नमः। ॐ क्षेत्राधिपाय नमः। ॐ क्षमाभर्त्रे नमः। ॐ लयस्थाय नमः। ॐ लड्डुकप्रियाय नमः। ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः। ॐ दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ भक्तिसुलभाय नमः। ॐ याज्ञिकाय नमः। ॐ याजकप्रियाय नमः।

गकारादि श्रीगणपति सहस्रनामावलि- विनियोग- ॐ अस्य श्रीगणपति गकारादि सहस्रनाममाला मंत्रस्य दुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीगणपतिर्देवता, गं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकम्, मम सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

अंगन्यास- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः। श्रीं तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा। ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्। क्रीं - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुं। ग्लौं - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्। गं - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ओंकार संनिभमिभाननमिन्दुभालं मुक्ताग्रबिन्दुममल द्युतिमेकदन्तम्। लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवं ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्।।

सहस्त्रनामावलि- ॐ गणेश्वराय नमः। ॐ गणाध्यक्षाय नमः। ॐ गणाराध्याय नमः। ॐ गणप्रियाय नमः। ॐ गणनाथाय नमः। ॐ गणस्वामिने नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ गणनायाकाय नमः। ॐ गणमूर्तये नमः। ॐ गणपतये नमः।।10।। ॐ गणत्रात्रे नमः। ॐ गणंजयाय नमः। ॐ गणपाय नमः। ॐ गणक्रीडाय नमः। ॐ गणदेवाय नमः। ॐ गणाधिपाय नमः। ॐ गणज्येष्ठाय नमः। ॐ गणश्रेष्ठाय नमः। ॐ गणप्रेष्ठाय नमः। ॐ गणाधिराजे नमः।।20।। ॐ गणराजे नमः। ॐ गणगोप्त्रे नमः। ॐ गणांगाय नमः। ॐ गणदैवताय नमः। ॐ गणबन्धवे नमः। ॐ गणसुहृदे नमः। ॐ गणाधीशाय नमः। ॐ गणप्रथाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गणप्रियसखाय नमः। ॐ गणप्रियसुहृदे नमः॥30॥ ॐ गणप्रियरताय नमः। ॐ गणप्रीतिविवर्धनाय नमः। ॐ गणमण्डलमध्यस्थाय नमः। ॐ गणकेलिपरायणाय नमः। ॐ गणाग्रण्ये नमः। ॐ गणेशानाय नमः। ॐ गणगीताय नमः। ॐ गणोच्छ्रयाय नमः। ॐ गण्याय नमः। ॐ गणहिताय नमः॥40॥ ॐ गर्जद्गणसेनाय नमः। ॐ गणोद्धताय नमः। ॐ गणभीतिप्रमथनाय नमः। ॐ गणभीत्यपहारकाय नमः। ॐ गणानार्हाय नमः। ॐ गणप्रौढाय नमः। ॐ गणभर्त्रे नमः। ॐ गणप्रभवे नमः। ॐ गणसेनाय नमः। ॐ गणचराय नमः॥50॥ ॐ गणप्राज्ञाय नमः। ॐ गणैकराजे नमः। ॐ गणाग्र्याय नमः। ॐ गणनाम्ने नमः। ॐ गणपालनतत्पराय नमः। ॐ गणजिते नमः। ॐ गणगर्भस्थाय नमः। ॐ गणप्रवणमानसाय नमः। ॐ गणगर्वपरीहर्त्रे नमः। ॐ गणाय नमः॥60॥ ॐ गणनमस्कृताय नमः। ॐ गणार्चितांघ्रियुगलाय नमः। ॐ गणरक्षणकृते नमः। ॐ गणध्याताय नमः। ॐ गणगुरुवे नमः। ॐ गणप्रणयतत्पराय नमः। ॐ गणागणपरित्रात्रे नमः। ॐ गणाधिहरणोद्धुराय नमः। ॐ गणसेतवे नमः। ॐ गणनुताय नमः॥70॥ ॐ गणकेतवे नमः। ॐ गणाग्रगाय नमः। ॐ गणहेतवे नमः। ॐ गणाग्राहिणे नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गणानुग्रहकारकाय नमः। ॐ गणागणानुग्रहभुवे नमः। ॐ गणागणवरप्रदाय नमः। ॐ गणस्तुताय नमः। ॐ गणप्राणाय नमः। ॐ गणसर्वस्वदायकाय नमः ॥80॥ ॐ गणवल्लभमूर्तये नमः। ॐ गणभूतये नमः। ॐ गणेष्टदाय नमः। ॐ गणसौख्यप्रदात्रे नमः। ॐ गणदुःखप्रणाशनाय नमः। ॐ गणप्रथितनाम्ने नमः। ॐ गणाभीष्टकराय नमः। ॐ गणमान्याय नमः। ॐ गणख्याताय नमः। ॐ गणवीताय नमः ॥90॥ ॐ गणोत्कटाय नमः। ॐ गणपालाय नमः। ॐ गणवराय नमः। ॐ गणगौरवदायकाय नमः। ॐ गणगर्जितसंतुष्टाय नमः। ॐ गणस्वच्छन्दगाय नमः। ॐ गणराजाय नमः। ॐ गणश्रीदाय नमः। ॐ गणाभयकराय नमः। ॐ गणमूर्धाभिषिक्ताय नमः ॥100॥ ॐ गणसैन्यपुरःसराय नमः। ॐ गुणातीताय नमः। ॐ गुणमयाय नमः। ॐ गुणत्रयविभागकृते नमः। ॐ गुणिने नमः। ॐ गुणाकृतिधराय नमः। ॐ गुणशालिने नमः। ॐ गुणप्रियाय नमः। ॐ गुणपूर्णाय नमः। ॐ गुणाम्भोधये नमः ॥110॥ ॐ गुणभाजे नमः। ॐ गुणदूरगाय नमः। ॐ गुणागुणवपुषे नमः। ॐ गौणशरीराय नमः। ॐ गुणमण्डिताय नमः। ॐ गुणस्रष्ट्रे नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गुणेशानाय नमः। ॐ गुणेशाय नमः। ॐ गुणेश्वराय नमः। ॐ गुणसृष्टजगत्संघाय नमः॥120॥ ॐ गुणसंघाय नमः। ॐ गुणैकराजे नमः। ॐ गुणप्रवृष्टाय नमः। ॐ गुणभुवे नमः। ॐ गुणीकृतचराचराय नमः। ॐ गुणप्रवणसंतुष्टाय नमः। ॐ गुणहीनपराङ्मुखाय नमः। ॐ गुणैकभुवे नमः। ॐ गुणश्रेष्ठाय नमः। ॐ गुणज्येष्ठाय नमः॥130॥ ॐ गुणप्रभवे नमः। ॐ गुणज्ञाय नमः। ॐ गुणसम्पूज्याय नमः। ॐ गुणैकसदनाय नमः। ॐ गुणप्रणयवते नमः। ॐ गौणप्रकृतये नमः। ॐ गुणभाजनाय नमः। ॐ गुणिप्रणतपादाब्जाय नमः। ॐ गुणिगीताय नमः। ॐ गुणोज्ज्वलाय नमः॥140॥ ॐ गुणवते नमः। ॐ गुणसम्पन्नाय नमः। ॐ गुणानन्दितमानसाय नमः। ॐ गुणसंचारचतुराय नमः। ॐ गुणसंचयसुन्दराय नमः। ॐ गुणगौराय नमः। ॐ गुणाधाराय नमः। ॐ गुणसंवृतचेतनाय नमः। ॐ गुणकृते नमः। ॐ गुणभृते नमः॥150॥ ॐ गुणाग्र्याय नमः। ॐ गुणपारदृशे नमः। ॐ गुणप्रचारिणे नमः। ॐ गुणयुजे नमः। ॐ गुणागुणविवेककृते नमः। ॐ गुणाकराय नमः। ॐ गुणकराय नमः। ॐ गुणप्रवणवर्धनाय नमः। ॐ गुणगूढचराय नमः। ॐ गौणसर्वसंसारचेष्टिताय नमः॥160॥ ॐ गुणदक्षिणसौहार्दाय नमः। ॐ गुणलक्षणतत्त्वविदे

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ गुणहारिणे नमः। ॐ गुणकलाय नमः। ॐ गुणसंघसखाय नमः। ॐ गुणसंस्कृतसंसाराय नमः। ॐ गुणतत्त्वविवेचकाय नमः। ॐ गुणगर्वधराय नमः। ॐ गौणसुखदुःखोदयाय नमः। ॐ गुणाय नमः।।170।। ॐ गुणाधीशाय नमः। ॐ गुणलयाय नमः। ॐ गुणवीक्षणलालसाय नमः। ॐ गुणगौरवदात्रे नमः। ॐ गुणदात्रे नमः। ॐ गुणप्रदाय नमः। ॐ गुणकृते नमः। ॐ गुणसम्बन्धाय नमः। ॐ गुणभृते नमः। ॐ गुणबन्धनाय नमः।।180।। ॐ गुणहृद्याय नमः। ॐ गुणस्थायिने नमः। ॐ गुणदायिने नमः। ॐ गुणोत्कटाय नमः। ॐ गुणचक्रधराय नमः। ॐ गौणावताराय नमः। ॐ गुणबान्धवाय नमः। ॐ गुणबन्धवे नमः। ॐ गुणप्रज्ञाय नमः। ॐ गुणप्राज्ञाय नमः।।190।। ॐ गुणालयाय नमः। ॐ गुणधात्रे नमः। ॐ गुणप्राणाय नमः। ॐ गुणगोपाय नमः। ॐ गुणाश्रयाय नमः। ॐ गुणयायिने नमः। ॐ गुणाधायिने नमः। ॐ गुणपाय नमः। ॐ गुणपालकाय नमः। ॐ गुणाहृततनवे नमः।।200।। ॐ गौणाय नमः। ॐ गीर्वाणाय नमः। ॐ गुणगौरवाय नमः। ॐ गुणवत्पूजितपदाय नमः। ॐ गुणवत्प्रीतिदायकाय नमः। ॐ गुणवत्गीतकीर्तये नमः। ॐ गुणवद्बद्धसौहृदाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गुणवद्वरदाय नमः। ॐ गुणवत्प्रतिपालकाय नमः। ॐ गुणवद्गुणसंतुष्टाय नमः॥210॥ ॐ गुणवद्रचितस्तवाय नमः। ॐ गुणवद्रक्षणपराय नमः। ॐ गुणवत्प्रणयप्रियाय नमः। ॐ गुणवच्चक्रसंचाराय नमः। ॐ गुणवत्कीर्तिवर्धनाय नमः। ॐ गुणवद्गुणचित्तस्थाय नमः। ॐ गुणवद्गुणरक्षकाय नमः। ॐ गुणवत्पोषणकराय नमः। ॐ गुणवच्छत्रुसूदनाय नमः। ॐ गुणवत्सिद्धिदात्रे नमः॥220॥ ॐ गुणवद्गौरवप्रदाय नमः। ॐ गुणवत्प्रवणस्वान्ताय नमः। ॐ गुणवद्गुणभूषणाय नमः। ॐ गुणवत्कुल विद्वेषिविनाशकरण क्षमाय नमः। ॐ गुणिस्तुतगुणाय नमः। ॐ गर्जत्प्रलयाम्बुदनिःस्वनाय नमः। ॐ गजाय नमः। ॐ गजपतये नमः। ॐ गर्जद्गजयुद्धविशारदाय नमः। ॐ गजास्याय नमः॥230॥ ॐ गजकर्णाय नमः। ॐ गजराजाय नमः। ॐ गजाननाय नमः। ॐ गजरूपधराय नमः। ॐ गर्जद्गजयूथोद्धुरध्वनये नमः। ॐ गजाधीशाय नमः। ॐ गजाधाराय नमः। ॐ गजासुरजयोद्धुराय नमः। ॐ गजदन्ताय नमः। ॐ गजवराय नमः॥240॥ ॐ गजकुम्भाय नमः। ॐ गजध्वनये नमः। ॐ गजमायाय नमः। ॐ गजमयाय नमः। ॐ गजश्रिये नमः। ॐ गजगर्जिताय नमः। ॐ गजामयहराय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गजपुष्टिप्रदायकाय नमः। ॐ गजोत्पत्तये नमः। ॐ गजत्रात्रे नमः॥250॥ ॐ गजहेतवे नमः। ॐ गजाधिपाय नमः। ॐ गजमुख्याय नमः। ॐ गजकुलप्रवराय नमः। ॐ गजदैत्यघ्ने नमः। ॐ गजकेतवे नमः। ॐ गजाध्यक्षाय नमः। ॐ गजसेतवे नमः। ॐ गजाकृतये नमः। ॐ गजवन्द्याय नमः॥260॥ ॐ गजप्राणाय नमः। ॐ गजसेव्याय नमः। ॐ गजप्रभवे नमः। ॐ गजमत्ताय नमः। ॐ गजेशानाय नमः। ॐ गजेशाय नमः। ॐ गजपुंगवाय नमः। ॐ गजदन्तधराय नमः। ॐ गुन्जन्मधुपाय नमः। ॐ गजवेषभृते नमः॥270॥ ॐ गजच्छन्नाय नमः। ॐ गजाग्रस्थाय नमः। ॐ गजयायिने नमः। ॐ गजाजयाय नमः। ॐ गजराजे नमः। ॐ गजयूथस्थाय नमः। ॐ गजगन्जकभन्जकाय नमः। ॐ गर्जितोज्झितदैत्यासवे नमः। ॐ गर्जितत्रातविष्टपाय नमः। ॐ गानज्ञाय नमः॥280॥ ॐ गानकुशलाय नमः। ॐ गानतत्त्वविवेचकाय नमः। ॐ गानश्लाघिने नमः। ॐ गानरसाय नमः। ॐ गानज्ञानपरायणाय नमः। ॐ गानागमज्ञाय नमः। ॐ गानांगाय नमः। ॐ गानप्रवणचेतनाय नमः। ॐ गानकृते नमः। ॐ गानचतुराय नमः॥290॥ ॐ गानविद्याविशारदाय नमः। ॐ गानध्येयाय नमः। ॐ गानगम्याय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ गानध्यानपरायणाय नमः। ॐ गानभुवे नमः। ॐ गानशीलाय नमः। ॐ गानशीलने नमः। ॐ गतश्रमाय नमः। ॐ गानविज्ञानसम्पन्नाय नमः। ॐ गानश्रवणलालसाय नमः॥300॥ ॐ गानयत्ताय नमः। ॐ गानमयाय नमः। ॐ गानप्रणयवते नमः। ॐ गानध्यात्रे नमः। ॐ गानबुद्धये नमः। ॐ गानोत्सुकमनसे नमः। ॐ गानोत्सुकाय नमः। ॐ गानभूमये नमः। ॐ गानसीम्ने नमः। ॐ गुणोज्ज्वलाय नमः॥310॥ ॐ गानांगज्ञानवते नमः। ॐ गानमानवते नमः। ॐ गानपेशलाय नमः। ॐ गानवत्प्रणयाय नमः। ॐ गानसमुद्राय नमः। ॐ गानभूषणाय नमः। ॐ गानसिन्धवे नमः। ॐ गानपराय नमः। ॐ गानप्राणाय नमः। ॐ गणाश्रयाय नमः॥320॥ ॐ गानैकभुवे नमः। ॐ गानहृष्टाय नमः। ॐ गानचक्षुषे नमः। ॐ गणैकदृशे नमः। ॐ गानमत्ताय नमः। ॐ गानरुचये नमः। ॐ गानविदे नमः। ॐ गानवित्प्रियाय नमः। ॐ गानान्तरात्मने नमः। ॐ गानाढ्याय नमः॥330॥ ॐ गानभ्राजत्सभाय नमः। ॐ गानमायाय नमः। ॐ गानधराय नमः। ॐ गानविद्याविशोधकाय नमः। ॐ गानाहितघ्नाय नमः। ॐ गानेन्द्राय नमः। ॐ गानलीनाय नमः। ॐ गतिप्रियाय नमः। ॐ गानाधीशाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गानलयाय नमः ।।340।। ॐ गानाधाराय नमः। ॐ गतीश्वराय नमः। ॐ गानवन्मानदाय नमः। ॐ गानभूतये नमः। ॐ गानैकभूतिमते नमः। ॐ गानतानतताय नमः। ॐ गानतानदानविमोहिताय नमः। ॐ गुरुवे नमः। ॐ गुरुदरश्रोणये नमः। ॐ गुरुतत्त्वार्थदर्शनाय नमः ।।350।। ॐ गुरुस्तुताय नमः। ॐ गुरुगुणाय नमः। ॐ गुरुमायाय नमः। ॐ गुरुप्रियाय नमः। ॐ गुरुकीर्तये नमः। ॐ गुरुभुजाय नमः। ॐ गुरुवक्षसे नमः। ॐ गुरुप्रभाय नमः। ॐ गुरुलक्ष्णसम्पन्नाय नमः। ॐ गुरुद्रोहपराङ्मुखाय नमः ।।360।। ॐ गुरुविद्याय नमः। ॐ गुरुप्राणाय नमः। ॐ गुरुबाहुबलोच्छ्रयाय नमः। ॐ गुरुदैत्यप्राणहराय नमः। ॐ गुरुदैत्यापहारकाय नमः। ॐ गुरुगर्वहराय नमः। ॐ गुह्यप्रवराय नमः। ॐ गुरुदर्पघ्ने नमः। ॐ गुरुगौरवदायिने नमः। ॐ गुरुभीत्यपहारकाय नमः ।।370।। ॐ गुरुशुण्डाय नमः। ॐ गुरुस्कन्धाय नमः। ॐ गुरुजंघाय नमः। ॐ गुरुप्रथाय नमः। ॐ गुरुभालाय नमः। ॐ गुरुगलाय नमः। ॐ गुरुश्रिये नमः। ॐ गुरुगर्वनुदे नमः। ॐ गुरूरवे नमः। ॐ गुरुपीनांसाय नमः ।।380।। ॐ गुरुप्रणयलालसाय नमः। ॐ गुरुमुख्याय नमः। ॐ गुरुकुलस्थायिने नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गुरुगुणाय नमः। ॐ गुरुसंशयभेत्त्रे नमः। ॐ गुरुमानप्रदायकाय नमः। ॐ गुरुधर्मसदाराध्याय नमः। ॐ गुरुधर्मनिकेतनाय नमः। ॐ गुरुदैत्यकुलच्छेत्त्रे नमः। ॐ गुरुसैन्याय नमः॥390॥ ॐ गुरुद्युत्ये नमः। ॐ गुरुधर्माग्रगण्याय नमः। ॐ गुरुधर्मधुरन्धराय नमः। ॐ गरिष्ठाय नमः। ॐ गुरुसंतापशमनाय नमः। ॐ गुरुपूजिताय नमः। ॐ गुरुधर्मधराय नमः। ॐ गौरधर्माधराय नमः। ॐ गदापहाय नमः। ॐ गुरुशास्त्रविचारज्ञाय नमः॥400॥ ॐ गुरुशास्त्रकृतोद्यमाय नमः। ॐ गुरुशास्त्रार्थ निलयाय नमः। ॐ गुरुशास्त्रालयाय नमः। ॐ गुरुमंत्राय नमः। ॐ गुरुश्रेष्ठाय नमः। ॐ गुरुमंत्रफलप्रदाय नमः। ॐ गुरुस्त्रीगमनोद्दामप्रायश्चित्त निवारकाय नमः। ॐ गुरुसंसारसुखदाय नमः। ॐ गुरुसंसारदुःखभिदे नमः। ॐ गुरुश्लाघापराय नमः॥410॥ ॐ गौरभानुखण्डावतंसभृते नमः। ॐ गुरुप्रसन्नमूर्तये नमः। ॐ गुरुशापविमोचकाय नमः। ॐ गुरुकान्तये नमः। ॐ गुरुमयाय नमः। ॐ गुरुशासनपालकाय नमः। ॐ गुरुतंत्राय नमः। ॐ गुरुप्रज्ञाय नमः। ॐ गुरुभाय नमः। ॐ गुरुदैवताय नमः॥420॥ ॐ गुरुविक्रमसंचाराय नमः। ॐ गुरुदृशे नमः। ॐ गुरुविक्रमाय नमः। ॐ गुरुक्रमाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गुरुप्रेष्ठाय नमः। ॐ गुरुपाखण्डखण्डकाय नमः। ॐ गुरुगर्जितसम्पूर्णब्रह्माण्डाय नमः। ॐ गुरुगर्जिताय नमः। ॐ गुरुपुत्रप्रियसखाय नमः। ॐ गुरुपुत्रभयापहाय नमः ।।430।। ॐ गुरुपुत्रपरित्रात्रे नमः। ॐ गुरुपुत्रवरप्रदाय नमः। ॐ गुरुपुत्रार्तिशमनाय नमः। ॐ गुरुपुत्राधिनाशनाय नमः। ॐ गुरुपुत्रप्राणदात्रे नमः। ॐ गुरुभक्तिपरायणाय नमः। ॐ गुरुविज्ञानविभवाय नमः। ॐ गौरभानुवरप्रदाय नमः। ॐ गौरभानुस्तुताय नमः। ॐ गौरभानुत्रासापहारकाय नमः ।।440।। ॐ गौरभानुप्रियाय नमः। ॐ गौरभानवे नमः। ॐ गौरववर्धनाय नमः। ॐ गौरभानुपरित्रात्रे नमः। ॐ गौरभानुसखाय नमः। ॐ गौरभानुप्रभवे नमः। ॐ गौरभानुभीतिप्रणाशनाय नमः। ॐ गौरीतेजःसमुत्पन्नाय नमः। ॐ गौरीहृदयनन्दनाय नमः। ॐ गौरीस्तनन्धयाय नमः ।।450।। ॐ गौरीमनोवांछितसिद्धिकृते नमः। ॐ गौराय नमः। ॐ गौरगुणाय नमः। ॐ गौरप्रकाशाय नमः। ॐ गौरभैरवाय नमः। ॐ गौरीशनन्दनाय नमः। ॐ गौरीप्रियपुत्राय नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ गौरीवरप्रदाय नमः। ॐ गौरीप्रणयाय नमः ।।460।। ॐ गौरीसच्छवये नमः। ॐ गौरीगणेश्वराय नमः। ॐ गौरीप्रवणाय नमः। ॐ गौरभावनाय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ गौरात्मने नमः। ॐ गौरकीर्तये नमः। ॐ गौरभावाय नमः। ॐ गरिष्ठदृशे नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ गौतमीनाथाय नमः॥470॥ ॐ गौतमीप्राणवल्लभाय नमः। ॐ गौतमाभीष्ट वरदाय नमः। ॐ गौतमाभयदायकाय नमः। ॐ गौतमप्रणयप्रह्वाय नमः। ॐ गौतमाश्रमदुःखघ्ने नमः। ॐ गौतमीतीरसंचारिणे नमः। ॐ गौतमीतीर्थनायकाय नमः। ॐ गौतमापत्परिहराय नमः। ॐ गौतमाधिविनाशनाय नमः। ॐ गोपतये नमः॥480॥ ॐ गोधनाय नमः। ॐ गोपाय नमः। ॐ गोपालप्रियदर्शनाय नमः। ॐ गोपालाय नमः। ॐ गोगणाधीशाय नमः। ॐ गोकश्मलनिवर्तकाय नमः। ॐ गोसहस्राय नमः। ॐ गोपवराय नमः। ॐ गोपगोपीसुखावहाय नमः। ॐ गोवर्धनाय नमः॥490॥ ॐ गोपगोपाय नमः। ॐ गोपाय नमः। ॐ गोकुलवर्धनाय नमः। ॐ गोचराय नमः। ॐ गोचराध्यक्षाय नमः। ॐ गोचरप्रीतिवृद्धिकृते नमः। ॐ गोमिने नमः। ॐ गोकष्टसंत्रात्रे नमः। ॐ गोसंतापनिवर्तकाय नमः। ॐ गोष्ठाय नमः॥500॥ ॐ गोष्ठाश्रयाय नमः। ॐ गोष्ठपतये नमः। ॐ गोधनवर्धनाय नमः। ॐ गोष्ठप्रियाय नमः। ॐ गोष्ठमयाय नमः। ॐ गोष्ठामयनिर्वतकाय नमः। ॐ गोलोकाय नमः। ॐ गोलकाय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः। ॐ गोभृते नमः। ॐ गोभर्त्रे नमः ।।510।। ॐ गोसुखावहाय नमः। ॐ गोदुहे नमः। ॐ गोधुग्गणप्रेष्ठाय नमः। ॐ गोदोग्ध्रे नमः। ॐ गोमयप्रियाय नमः। ॐ गोत्राय नमः। ॐ गोत्रपतये नमः। ॐ गोत्रप्रभवे नमः। ॐ गोत्रभयापहाय नमः। ॐ गोत्रवृद्धिकराय नमः ।।520।। ॐ गोत्रप्रियाय नमः। ॐ गोत्रार्तिनाशनाय नमः। ॐ गोत्रोद्धारपराय नमः। ॐ गोत्रप्रवराय नमः। ॐ गोत्रदैवताय नमः। ॐ गोत्रविख्यातनाम्ने नमः। ॐ गोत्रिणे नमः। ॐ गोत्रप्रपालकाय नमः। ॐ गोत्रसेतवे नमः। ॐ गोत्रकेतवे नमः ।।530।। ॐ गोत्रहेतवे नमः। ॐ गतक्लमाय नमः। ॐ गोत्रत्राणकराय नमः। ॐ गोत्रपतये नमः। ॐ गोत्रेशपूजिताय नमः। ॐ गोत्रभिदे नमः। ॐ गोत्रभित्त्रात्रे नमः। ॐ गोत्रभिद्वरदायकाय नमः। ॐ गोत्रभित्पूजितपदाय नमः। ॐ गोत्रभिच्छत्रुसूदनाय नमः ।।540।। ॐ गोत्रभित्प्रीतिदाय नमः। ॐ गोत्रभिदे नमः। ॐ गोत्रपालकाय नमः। ॐ गोत्रभिद्गीतचरिताय नमः। ॐ गोत्रभिद्राज्यरक्षकाय नमः। ॐ गोत्रभिज्जयदायिने नमः। ॐ गोत्रभित्प्रणयाय नमः। ॐ गोत्रभिद्भयसम्भेत्त्रे नमः। ॐ गोत्रभिन्मानदायकाय नमः। ॐ गोत्रभिद्गोपनपराय नमः ।।550।। ॐ गोत्रभित्सैन्यनायकाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ गोत्राधिपप्रियाय नमः। ॐ गोत्रपुत्रीपुत्राय नमः। ॐ गिरिप्रियाय नमः। ॐ ग्रन्थज्ञाय नमः। ॐ ग्रन्थकृते नमः। ॐ ग्रन्थग्रन्थिभिदे नमः। ॐ ग्रन्थविघ्नघ्ने नमः। ॐ ग्रन्थादये नमः। ॐ ग्रन्थसंचाराय नमः॥560॥ ॐ ग्रन्थश्रवणलोलुपाय नमः। ॐ ग्रन्थाधीनक्रियाय नमः। ॐ ग्रन्थप्रियाय नमः। ॐ ग्रन्थार्थतत्त्वविदे नमः। ॐ ग्रन्थसंशयंछेदिने नमः। ॐ ग्रन्थवक्त्रे नमः। ॐ ग्रहाग्रण्ये नमः। ॐ ग्रन्थगीतगुणाय नमः। ॐ ग्रन्थगीताय नमः। ॐ ग्रन्थादिपूजिताय नमः॥570॥ ॐ ग्रन्थारम्भस्तुताय नमः। ॐ ग्रन्थग्राहिणे नमः। ॐ ग्रन्थार्थपारदृशे नमः। ॐ ग्रन्थदृशे नमः। ॐ ग्रन्थविज्ञानाय नमः। ॐ ग्रन्थसंदर्भशोधकाय नमः। ॐ ग्रन्थकृत्पूजिताय नमः। ॐ ग्रन्थकराय नमः। ॐ ग्रन्थपरायणाय नमः। ॐ ग्रन्थपारायणपराय नमः॥580॥ ॐ ग्रन्थसंदेहभंजकाय नमः। ॐ ग्रन्थकृद्वरदात्रे नमः। ॐ ग्रन्थकृद्वन्दिताय नमः। ॐ ग्रन्थानुरक्ताय नमः। ॐ ग्रन्थज्ञाय नमः। ॐ ग्रन्थानुग्रहदायकाय नमः। ॐ ग्रन्थान्तरात्मने नमः। ॐ ग्रन्थार्थपण्डिताय नमः। ॐ ग्रन्थसौहृदाय नमः। ॐ ग्रन्थपारंगमाय नमः॥590॥ ॐ ग्रन्थगुणविदे नमः। ॐ ग्रन्थविग्रहाय नमः। ॐ ग्रन्थसेतवे नमः। ॐ ग्रन्थहेतवे नमः। ॐ ग्रन्थकेतवे नमः। ॐ ग्रहाग्रगाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ॐ ग्रन्थपूज्याय नमः। ॐ ग्रन्थगेयाय नमः। ॐ ग्रन्थग्रथनलालसाय नमः। ॐ ग्रन्थभूमये नमः॥600॥ ॐ ग्रहश्रेष्ठाय नमः। ॐ ग्रहकेतवे नमः। ॐ ग्रहाश्रयाय नमः। ॐ ग्रन्थकाराय नमः। ॐ ग्रन्थकारमान्याय नमः। ॐ ग्रन्थप्रसारकाय नमः। ॐ ग्रन्थश्रमज्ञाय नमः। ॐ ग्रन्थांगाय नमः। ॐ ग्रन्थभ्रमनिवारकाय नमः। ॐ ग्रन्थप्रवणसर्वांगाय नमः॥610॥ ॐ ग्रन्थप्रणयतत्पराय नमः। ॐ गीताय नमः। ॐ गीतगुणाय नमः। ॐ गीतकीर्तये नमः। ॐ गीतविशारदाय नमः। ॐ गीतस्फीतयशसे नमः। ॐ गीतप्रणयाय नमः। ॐ गीतचंचुराय नमः। ॐ गीतप्रसन्नाय नमः। ॐ गीतात्मने नमः॥620॥ ॐ गीतलोलाय नमः। ॐ गतस्पृहाय नमः। ॐ गीताश्रयाय नमः। ॐ गीतमयाय नमः। ॐ गीततत्त्वार्थकोविदाय नमः। ॐ गीतसंशयसंछेत्रे नमः। ॐ गीतसंगीतशासनाय नमः। ॐ गीतार्थज्ञाय नमः। ॐ गीततत्त्वाय नमः। ॐ गीतातत्त्वाय नमः॥630॥ ॐ गताश्रयाय नमः। ॐ गीतासाराय नमः। ॐ गीताकृते नमः। ॐ गीताकृद्विघ्ननाशनाय नमः। ॐ गीताशक्ताय नमः। ॐ गीतलीनाय नमः। ॐ गीताविगतसंज्वराय नमः। ॐ गीतैकदृशे नमः। ॐ गीतभूतये नमः। ॐ गीतप्रीताय

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नमः ।।640।। ॐ गतालसाय नमः। ॐ गीतवाद्यपटवे नमः। ॐ गीतप्रभवे नमः। ॐ गीतार्थतत्त्वविदे नमः। ॐ गीतागीतविवेकज्ञाय नमः। ॐ गीताप्रवणचेतनाय नमः। ॐ गतभिये नमः। ॐ गतविद्वेषाय नमः। ॐ गतसंसारबन्धनाय नमः। ॐ गतमायाय नमः ।।650।। ॐ गतत्रासाय नमः। ॐ गतदुःखाय नमः। ॐ गतज्वराय नमः। ॐ गतासुहृदे नमः। ॐ गताज्ञानाय नमः। ॐ गतदुष्टाशयाय नमः। ॐ गताय नमः। ॐ गतार्तये नमः। ॐ गतसंकल्पाय नमः। ॐ गतदुष्टविचेष्टिताय नमः ।।660।। ॐ गताहंकारसंचाराय नमः। ॐ गतदर्पाय नमः। ॐ गताहिताय नमः। ॐ गतविघ्नाय नमः। ॐ गतभयाय नमः। ॐ गतागतनिवारकाय नमः। ॐ गतव्यथाय नमः। ॐ गतापायाय नमः। ॐ गतदोषाय नमः। ॐ गतेःपराय नमः ।।670।। ॐ गतसर्वविकाराय नमः। ॐ गतगंजितकुंजराय नमः। ॐ गतकम्पितभूपृष्ठाय नमः। ॐ गतरुजे नमः। ॐ गतकल्मषाय नमः। ॐ गतदैन्याय नमः। ॐ गतस्तैन्याय नमः। ॐ गतमानाय नमः। ॐ गतश्रमाय नमः। ॐ गतक्रोधाय नमः ।।680।। ॐ गतग्लानये नमः। ॐ गतम्लानाय नमः। ॐ गतभ्रमाय नमः। ॐ गताभावाय नमः। ॐ गतभवाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गततत्त्वार्थसंशयाय नमः। ॐ गयासुरशिरश्छेत्त्रे नमः। ॐ गयासुरवरप्रदाय नमः। ॐ गयावासाय नमः। ॐ गयानाथाय नमः॥690॥ ॐ गयावासिनमस्कृताय नमः। ॐ गयातीर्थफलाध्यक्षाय नमः। ॐ गयायात्राफलप्रदाय नमः। ॐ गयामयाय नमः। ॐ गयाक्षेत्राय नमः। ॐ गयाक्षेत्रनिवासकृते नमः। ॐ गयावासिस्तुताय नमः। ॐ गायन्मधुव्रतलसत्कटाय नमः। ॐ गायकाय नमः। ॐ गायकवराय नमः॥700॥ ॐ गायकेष्टफलप्रदाय नमः। ॐ गायकप्रणयिने नमः। ॐ गात्रे नमः। ॐ गायकाभयदायकाय नमः। ॐ गायकप्रवणस्वान्ताय नमः। ॐ गायकाय प्रथमाय नमः। ॐ गायकोद्गीतसम्प्रीताय नमः। ॐ गायकोत्कटविघ्नघ्ने नमः। ॐ गानगेयाय नमः। ॐ गायकेशाय नमः॥710॥ ॐ गायकान्तरसंचराय नमः। ॐ गायकप्रियदाय नमः। ॐ गायकाधीनविग्रहाय नमः। ॐ गेयाय नमः। ॐ गेयगुणाय नमः। ॐ गेयचरिताय नमः। ॐ गेयतत्त्वविदे नमः। ॐ गायकत्रासघ्ने नमः। ॐ ग्रन्थाय नमः। ॐ ग्रन्थतत्त्वविवेचकाय नमः॥720॥ ॐ गाढानुरागाय नमः। ॐ गाढांगाय नमः। ॐ गाढगंगाजलाय नमः। ॐ गाढावगाढजलधये नमः। ॐ गाढप्रज्ञाय नमः। ॐ गतामयाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गाढप्रत्यर्थिसैन्याय नमः। ॐ गाढानुग्रहतत्पराय नमः। ॐ गाढश्लेषरसाभिज्ञाय नमः। ॐ गाढनिर्वृतिसाधकाय नमः ।।730।। ॐ गंगाधरेष्टवरदाय नमः। ॐ गंगाधरभयापहाय नमः। ॐ गंगाधरगुरुवे नमः। ॐ गंगाधरध्यातपदाय नमः। ॐ गंगाधरस्तुताय नमः। ॐ गंगाधराराध्याय नमः। ॐ गतस्मयाय नमः। ॐ गंगाधरप्रियाय नमः। ॐ गंगाधराय नमः। ॐ गंगाम्बुसुन्दराय नमः ।।740।। ॐ गंगाजलरसास्वादचतुराय नमः। ॐ गांगतीरयाय नमः। ॐ गंगाजलप्रणयवते नमः। ॐ गंगातीरविहारकृते नमः। ॐ गंगाप्रियाय नमः। ॐ गांगजलावगाहनपराय नमः। ॐ गन्धमादनसंवासाय नमः। ॐ गन्धमादनकेलिकृते नमः। ॐ गन्धानुलिप्तसर्वांगाय नमः। ॐ गन्धलुब्धमधुव्रताय नमः ।।750।। ॐ गन्धाय नमः। ॐ गन्धर्वराजाय नमः। ॐ गन्धर्वप्रियकृते नमः। ॐ गंधर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः। ॐ गन्धर्वप्रीतिवर्धनाय नमः। ॐ गकारबीजनिलयाय नमः। ॐ गकराय नमः। ॐ गर्विगर्वनुदे नमः। ॐ गन्धर्वगणसंसेव्याय नमः। ॐ गन्धर्ववरदायकाय नमः ।।760।। ॐ गन्धर्वाय नमः। ॐ गन्धमातंगाय नमः। ॐ गन्धर्वकुलदैवताय नमः। ॐ गन्धर्वगर्वसंछेत्त्रे नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गन्धर्ववरदर्पघ्ने नमः। ॐ गन्धर्वप्रवणस्वान्ताय नमः। ॐ गन्धर्वगणसंस्तुताय नमः। ॐ गन्धर्वार्चितपादाब्जाय नमः। ॐ गंधर्वभयहारकाय नमः। ॐ गन्धर्वाभयदाय नमः ।।770।। ॐ गन्धर्वप्रतिपालकाय नमः। ॐ गन्धर्वगीतचरिताय नमः। ॐ गन्धर्वप्रणयोत्सुकाय नमः। ॐ गन्धर्वगानश्रवणप्रणयिने नमः। ॐ गर्वभन्जनाय नमः। ॐ गन्धर्वत्राणसन्नद्धाय नमः। ॐ गन्धर्वसमरक्षमाय नमः। ॐ गन्धर्वस्त्रीभिराराध्याय नमः। ॐ गानाय नमः। ॐ गानपटवे नमः ।।780।। ॐ गच्छाय नमः। ॐ गच्छपतये नमः। ॐ गच्छनायकाय नमः। ॐ गच्छगर्वघ्ने नमः। ॐ गच्छराजाय नमः। ॐ गच्छेशाय नमः। ॐ गच्छराजनमस्कृताय नमः। ॐ गच्छप्रियाय नमः। ॐ गच्छगुरुवे नमः। ॐ गच्छत्राणकृतोद्यमाय नमः ।।790।। ॐ गच्छप्रभवे नमः। ॐ गच्छचराय नमः। ॐ गच्छप्रियकृतोद्यमाय नमः। ॐ गच्छगीतगुणाय नमः। ॐ गच्छमर्यादाप्रतिपालकाय नमः। ॐ गच्छधात्रे नमः। ॐ गच्छभर्त्रे नमः। ॐ गच्छवन्द्याय नमः। ॐ गुरोर्गुरवे नमः। ॐ गृत्साय नमः ।।800।। ॐ गृत्समदाय नमः। ॐ गृत्समदाभीष्टवरप्रदाय नमः। ॐ गीर्वाणगीतचरिताय नमः। ॐ गीर्वाणगणसेविताय नमः। ॐ गीर्वाणवरदात्रे नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गीर्वाणभयनाशकृते नमः। ॐ गीर्वाणगुणसंवीताय नमः। ॐ गीर्वाणारातिसूदनाय नमः। ॐ गीर्वाणधाम्ने नमः। ॐ गीर्वाणगोप्त्रे नमः॥810॥ ॐ गीर्वाणगर्वह्रदे नमः। ॐ गीर्वाणार्तिहराय नमः। ॐ गीर्वाणवरदायकाय नमः। ॐ गीर्वाणशरणाय नमः। ॐ गीतनाम्ने नमः। ॐ गीर्वाणसुन्दराय नमः। ॐ गीर्वाणप्राणदाय नमः। ॐ गन्त्रे नमः। ॐ गीर्वाणानीकरक्षकाय नमः। ॐ गुहेहापूरकाय नमः॥820॥ ॐ गन्धमत्ताय नमः। ॐ गीर्वाणपुष्टिदाय नमः। ॐ गीर्वाणप्रयुतत्रात्रे नमः। ॐ गीतगोत्राय नमः। ॐ गताहिताय नमः। ॐ गीर्वाणसेवितपदाय नमः। ॐ गीर्वाणप्रथिताय नमः। ॐ गलते नमः। ॐ गीर्वाणगोत्रप्रवराय नमः। ॐ गीर्वाणफलदायकाय नमः॥830॥ ॐ गीर्वाणप्रियकर्त्रे नमः। ॐ गीर्वाणागमसारविदे नमः। ॐ गीर्वाणगमसम्पत्तये नमः। ॐ गीर्वाणव्यसनापहाय नमः। ॐ गीर्वाणप्रणयाय नमः। ॐ गीतग्रहणोत्सुकमानसाय नमः। ॐ गीर्वाणभ्रमसम्भेत्त्रे नमः। ॐ गीर्वाणगुरुपूजिताय नमः। ॐ ग्रहाय नमः। ॐ ग्रहपतये नमः॥840॥ ॐ ग्राहाय नमः। ॐ ग्रहपीडाप्रणाशनाय नमः। ॐ ग्रहस्तुताय नमः। ॐ ग्राहाध्यक्षाय नमः। ॐ ग्रहेशाय नमः। ॐ ग्रहदैवताय नमः। ॐ ग्रहकृते नमः। ॐ ग्रहभर्त्रे नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ग्रहेशानाय नमः। ॐ ग्रहेश्वराय नमः ।।850।। ॐ ग्रहाराध्याय नमः। ॐ ग्रहत्रात्रे नमः। ॐ ग्रहगोप्त्रे नमः। ॐ ग्रहोत्कटाय नमः। ॐ ग्रहगीतगुणाय नमः। ॐ ग्रन्थप्रणेत्रे नमः। ॐ ग्रहवन्दिताय नमः। ॐ गविने नमः। ॐ गवीश्वराय नमः। ॐ गर्विणे नमः ।।860।। ॐ गर्विष्ठाय नमः। ॐ गर्विगर्वघ्ने नमः। ॐ गवांप्रियाय नमः। ॐ गवांनाथाय नमः। ॐ गवीशानाय नमः। ॐ गवाम्पतये नमः। ॐ गव्यप्रियाय नमः। ॐ गवांगोप्त्रे नमः। ॐ गविसम्पत्तिसाधकाय नमः। ॐ गविरक्षणसंनद्धाय नमः ।।870।। ॐ गवांभयहराय नमः। ॐ गविगर्वहराय नमः। ॐ गोदाय नमः। ॐ गोप्रदाय नमः। ॐ गोजयप्रदाय नमः। ॐ गजायुतबलाय नमः। ॐ गण्डगुन्जन्मत्तमधुव्रताय नमः। ॐ गण्डस्थललसद्दानमिलन्मत्तालिद मण्डिताय नमः। ॐ गुडाय नमः। ॐ गुडप्रियाय नमः ।।880।। ॐ गुण्डगलद्दानाय नमः। ॐ गुडाशनाय नमः। ॐ गुडाकेशाय नमः। ॐ गुडाकेशसहायाय नमः। ॐ गुडलड्डभुजे नमः। ॐ गुडभुजे नमः। ॐ गुडभुग्गण्याय नमः। ॐ गुडाकेशवरप्रदाय नमः। ॐ गुडाकेशार्चितपदाय नमः। ॐ गुडाकेशसखाय नमः ।।890।। ॐ गदाधरार्चितप्रदाय नमः। ॐ गदाधरवरप्रदाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गदायुधाय नमः। ॐ गदापाण्ये नमः। ॐ गदायुद्धविशारदाय नमः। ॐ गदघ्ने नमः। ॐ गददर्पघ्नाय नमः। ॐ गदगर्वप्रणाशनाय नमः। ॐ गदग्रस्तपरित्रात्रे नमः। ॐ गदाडम्बरखण्डकाय नमः॥900॥ ॐ गुहाय नमः। ॐ गुहाग्रजाय नमः। ॐ गुप्ताय नमः। ॐ गुहाशायिने नमः। ॐ गुहाशयाय नमः। ॐ गुहप्रीतिकराय नमः। ॐ गूढाय नमः। ॐ गूढगुल्फाय नमः। ॐ गुणैकदृशे नमः। ॐ गिरे नमः॥910॥ ॐ गीष्पतये नमः। ॐ गिरीशानाय नमः। ॐ गीर्देवीगीतसद्गुणाय नमः। ॐ गीर्देवाय नमः। ॐ गीष्प्रियाय नमः। ॐ गीर्भुवे नमः। ॐ गीरात्मने नमः। ॐ गीष्प्रियंकराय नमः। ॐ गीर्भूमये नमः। ॐ गीरसज्ञाय नमः॥920॥ ॐ गीःप्रसन्नाय नमः। ॐ गिरीश्वराय नमः। ॐ गिरीशजाय नमः। ॐ गिरौशायिने नमः। ॐ गिरिराजसुखावहाय नमः। ॐ गिरिराजार्चितपदाय नमः। ॐ गिरिराजनमस्कृताय नमः। ॐ गिरिराजगुहाविष्टाय नमः। ॐ गिरिराजभयप्रदाय नमः। ॐ गिरिराजेष्टवरदाय नमः॥930॥ ॐ गिरिराजप्रपालकाय नमः। ॐ गिरिराजसुतासूनवे नमः। ॐ गिरीराजजयप्रदाय नमः। ॐ गिरिव्रजवनस्थायिने नमः। ॐ गिरिव्रजचराय नमः। ॐ गर्गाय नमः। ॐ गर्गप्रियाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गर्गदेवाय नमः। ॐ गर्गनमस्कृताय नमः। ॐ गर्गभीतिहराय नमः॥940॥ ॐ गर्गवरदाय नमः। ॐ गर्गसंस्तुताय नमः। ॐ गर्गगीतप्रसन्नात्मने नमः। ॐ गर्गानन्दकराय नमः। ॐ गर्गप्रियाय नमः। ॐ गर्गमानप्रदाय नमः। ॐ गर्गारिभन्जकाय नमः। ॐ गर्गवर्गपरित्रात्रे नमः। ॐ गर्गसिद्धिप्रदायकाय नमः। ॐ गर्गग्लानिहराय नमः॥950॥ ॐ गर्गभ्रमह्रदे नमः। ॐ गर्गसंगताय नमः। ॐ गर्गाचार्याय नमः। ॐ गर्गमुनये नमः। ॐ गर्गसम्मानभाजनाय नमः। ॐ गम्भीराय नमः। ॐ गणितप्रज्ञाय नमः। ॐ गणितागमसारविदे नमः। ॐ गणकाय नमः। ॐ गणकश्लाघ्याय नमः॥960॥ ॐ गणकप्रणयोत्सुकाय नमः। ॐ गणकप्रवणस्वान्ताय नमः। ॐ गणिताय नमः। ॐ गणितागमाय नमः। ॐ गद्याय नमः। ॐ गद्यमयाय नमः। ॐ गद्यपद्यविद्याविशारदाय नमः। ॐ गललग्नमहानागाय नमः। ॐ गलदर्चिषे नमः। ॐ गलन्मदाय नमः॥970॥ ॐ गल्तकुष्ठिव्यथाहन्त्रे नमः। ॐ गलत्कुष्ठिसुखप्रदाय नमः। ॐ गम्भीरनाभये नमः। ॐ गम्भीरस्वराय नमः। ॐ गम्भीरलोचनाय नमः। ॐ गम्भीरगुणसंपन्नाय नमः। ॐ गम्भीरगतिशोभनाय नमः। ॐ गर्भप्रदाय नमः। ॐ गर्भरूपाय नमः। ॐ

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

गर्भापद्विनिवारकाय नमः।।980।। ॐ गर्भागमनसंनाशाय नमः। ॐ गर्भदाय नमः। ॐ गर्भशोकनुदे नमः। ॐ गर्भत्रात्रे नमः। ॐ गर्भगोप्त्रे नमः। ॐ गर्भपुष्टिकराय नमः। ॐ गर्भाश्रयाय नमः। ॐ गर्भमयाय नमः। ॐ गर्भामयनिवारकाय नमः। ॐ गर्भाधाराय नमः।।990।। ॐ गर्भधराय नमः। ॐ गर्भसंतोषसाधकाय नमः। ॐ गर्भगौरवसंधान साधनाय नमः। ॐ गर्भवर्गहृदे नमः। ॐ गरीयसे नमः। ॐ गर्वनुदे नमः। ॐ गर्वमर्दिने नमः। ॐ गरदमर्दकाय नमः। ॐ गरसंतापशमनाय नमः। ॐ गुरुराज्यसुखप्रदाय नमः।।1000।।

फलश्रुति– नाम्नां सहस्रमुदितं महद् गणपतेरिदम्। गकारादि जगद्वन्द्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।।

य इदं प्रयतः प्रातस्त्रिसंध्यं वा पठेन्नरः। वांछितं समवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम्। विद्यार्थी लभते विद्यां सत्यं सत्यं न संशयः।।

भूर्जत्वचि समालिख्य कुंकुमेन समाहितः। चतुर्थ्यां भौमवारे च चन्द्रसूर्योपरागके।।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

पूजयित्वा गणाधीशं यथोक्तविधिना पुरा। पूजयेद् यो यथाशक्त्या जुहुयाच्च शमीदलैः।।

गुरुं सम्पूज्य वस्त्राद्यैः कृत्वा चापि प्रदक्षिणाम्। धारयेद् यः प्रयत्नेन स साक्षाद्गणनायकः।।

सुराश्चासुरवर्याश्च पिशाचाः किन्नरोरगाः। प्रणमन्ति सदा तं वै दृष्ट्वा विस्मितमानसाः।।

राजा सपदि वश्यः स्यात् कामिन्यस्तदवशे स्थिराः। तस्य वंशे स्थिरा लक्ष्मीः कदापि न विमुंचति।।

निष्कामो यः पठेदेतद् गणेश्वरपरायणः। स प्रतिष्ठां परां प्राप्य निजलोकमवाप्नुयात्।।

इदं ते कीर्तितं नाम्नां सहस्रं देवि पावनम्। न देयं कृपणायाथ शठाय गुरुविद्विषे।।

दत्त्वा च भ्रंशमाप्नोति देवतायाः प्रकोपतः। इति श्रुत्वा महादेवी तदा विस्मितमानसा।। पूजसामास विधिवद् गणेश्वरपदद्वयम्।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

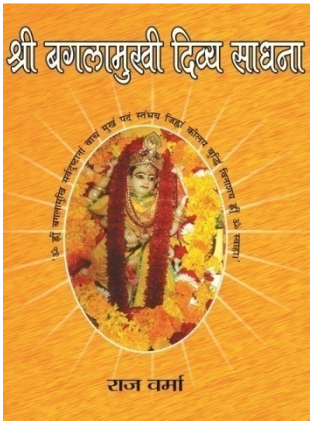

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413